Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

Original Article

वैश्विक गाँव में गाँधी की तलाश

डॉ. मो. हेदायतुल्लाह
राजनीति विज्ञान विभाग,ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा
Email: hedayatm60@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180241
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 2(A)
Pp. 206-210
February - 2026
Submitted: 19 Jan. 2026
Revised: 29 Jan. 2026
Accepted: 14 Feb. 2026
Published: 28 Feb. 2026

सारांश

महात्मा गांधी का दर्शन, जिसे कभी पुरातन मान लिया गया था, आज के डिजिटल वैश्विक गाँव में आश्चर्यजनक रूप से प्रासंगिक हो उठा है। जहाँ एक ओर वैश्वीकरण ने संसार को एक सूत्र में बाँध दिया है, वहीं गांधी का ग्राम-केंद्रित दर्शन इस एकीकरण के दुष्प्रभावों—सांस्कृतिक एकरूपता, आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय संकट और बढ़ती हिंसा—के समाधान का मार्ग प्रशस्त करता है। अनंत महिंद्रा के अनुसार, डिजिटल प्रौद्योगिकी के तीन मूल सिद्धांत—न्यूनीकरण, विकेंद्रीकरण और लोकतंत्रीकरण—गाँधी के आर्थिक दर्शन के अनुरूप हैं, जैसे स्वास्थ्य स्लेट जैसे उपकरण ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा को सशक्त बना रहे हैं और मंडी ट्रेड्स जैसे प्लेटफॉर्म किसानों को सीधे बाज़ार से जोड़ रहे हैं। गाँधी के सर्वोदय, ग्राम स्वराज, ट्रस्टीशिप और नई तालीम के सिद्धांत आज सामाजिक उद्यमिता, ई-पंचायत, कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से नए सिरे से जीवंत हो रहे हैं। अपरिग्रह और प्रकृति के साथ सामंजस्य का विचार आज के जलवायु संकट के समय वैश्विक हरित आंदोलनों का मार्गदर्शन कर रहा है। इस प्रकार, वैश्विक गाँव में गाँधी केवल एक ऐतिहासिक स्मृति नहीं, बल्कि एक जीवंत मार्गदर्शक हैं, जो हमें सिखाते हैं कि प्रौद्योगिकी को मानवीय कैसे बनाया जाए, अर्थव्यवस्था को न्यायसंगत कैसे रखा जाए, और समाज को अधिक समावेशी कैसे बनाया जाए—एक ऐसा संतुलन जो वसुधैव कुटुम्बकम के प्राचीन आदर्श और ग्लोबल विलेज की आधुनिक अवधारणा के बीच सेतु का कार्य करता है।

कीवर्ड: *गाँधीवादी दर्शन, वैश्विक गाँव, डिजिटल युग, सर्वोदय, स्वदेशी, अहिंसा, सामुदायिक विकास, सतत विकास, सामाजिक उद्यमिता, ग्राम स्वराज, नई तालीम, पर्यावरणीय स्थिरता, विकेंद्रीकरण*

प्रस्तावना

वैश्वीकरण ने संसार को एक सूत्र में बाँध दिया है, वहीं गांधी का ग्राम-केंद्रित दर्शन इस एकीकरण के दुष्प्रभावों—सांस्कृतिक एकरूपता, आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय संकट और बढ़ती हिंसा—के समाधान का मार्ग प्रशस्त करता है। पूर्व प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिंह राव के अनुसार, गांधी ने मानवीय चेतना में एक नवीन नैतिक चेतना जागृत करने का प्रयास किया था, और यही चेतना आज यूनेस्को के संविधान की आधारशिला है कि "चूँकि युद्ध मानव के मन में उत्पन्न होते हैं, इसलिए शांति की रक्षा का किला भी मानव के मन में ही बनना चाहिए" । गांधी का ग्राम स्वराज का सपना—एक ऐसा गाँव जो आत्मनिर्भर हो, अपने संसाधनों का स्वयं उपयोग करे और पड़ोसी गाँवों से केवल आवश्यकता पड़ने पर जुड़े—आज के वैश्विक परिदृश्य में एक नए रूप में साकार हो रहा है, जहाँ विकसित देशों को 'महानगर' और विकासशील देशों को 'गाँव' मानकर गांधी के आर्थिक चिंतन को वैश्विक स्तर पर लागू किया जा सकता है ।[1] कोविड-19 महामारी ने इस तथ्य को और अधिक रेखांकित किया कि अत्यधिक केंद्रीकृत व्यवस्थाओं की अपेक्षा विकेंद्रीकृत, आत्मनिर्भर समुदाय अधिक लचीले होते हैं । गांधी की तलाश आज न केवल भारत के गाँवों में, बल्कि विश्व भर के उन आंदोलनों में भी हो रही है जो जलवायु न्याय, सामाजिक समानता और अहिंसक प्रतिरोध के लिए संघर्षरत हैं। मार्शल मैकलुहान ने 1960 के दशक में “वैश्विक गाँव” (ग्लोबल विलेज) की अवधारणा प्रस्तुत की, तो उन्होंने एक ऐसे विश्व की कल्पना की थी जहाँ सूचना और संचार की तीव्र क्रांति समस्त मानवता को एक सूत्र में बाँध देगी।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
डॉ. मो. हेदायतुल्लाह, राजनीति विज्ञान विभाग,ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

How to cite this article:
हेदायतुल्लाह, . मो . (2026). वैश्विक गाँव में गाँधी की तलाश. Journal of Research & Development, 18(2(A)), 206–210. https://doi.org/10.5281/zenodo.18886019

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18886019
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

आज, इंटरनेट, सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और डिजिटल प्रौद्योगिकियों के इस युग में, मैकलुहान की भविष्यवाणी वास्तविकता बन चुकी है। परंतु प्रश्न यह है कि इस तीव्रता से बदलते, परस्पर जुड़े और जटिल होते विश्व में, एक देहाती लोल-धोती धारी, हाथ में छड़ी लिए महात्मा गाँधी की प्रासंगिकता क्या है?

अनंत महिंद्रा ने एक उद्योग सम्मेलन में यह कहकर श्रोताओं को चौंका दिया था कि "महात्मा गाँधी डिजिटल युग के मसीहा हैं"।[2] यह प्रतीत होने वाला विरोधाभास वास्तव में गाँधी के दर्शन की गहरी समकालीन प्रासंगिकता को उजागर करता है। गाँधी का चिंतन, जो कभी पुरातन और पूर्व-आधुनिक कहकर खारिज कर दिया गया था, आज डिजिटल क्रांति और वैश्विक संकटों के दौर में एक स्थायी और व्यावहारिक दर्शन के रूप में पुनर्स्थापित हो रहा है। यह लेख इसी पुनर्मूल्यांकन की प्रक्रिया का विश्लेषण करेगा कि कैसे गाँधी के विचार—सर्वोदय, स्वदेशी, अहिंसा, ग्राम स्वराज, नई तालीम और ट्रस्टीशिप—आज के वैश्विक गाँव में नए अर्थ और अनुप्रयोग ग्रहण कर रहे हैं।

गाँधी और वैश्विक गाँव का प्रतिच्छेदन:

गाँधीवादी दर्शन की मूल संरचना - गाँधी का दर्शन केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का आंदोलन नहीं था, बल्कि एक समग्र सामाजिक-आर्थिक-नैतिक पुनर्गठन का सपना था। उनके चिंतन के केंद्र में थे:

- **सत्य और अहिंसा:** जीवन के हर क्षेत्र में सत्य की खोज और हिंसा के त्याग का सिद्धांत।
- **सर्वोदय:** सबका उत्थान—समाज के अंतिम व्यक्ति तक का विकास।
- **स्वदेशी:** स्थानीय संसाधनों और स्थानीय उत्पादन पर आधारित आत्मनिर्भरता।
- **ग्राम स्वराज:** गाँवों को स्वायत्त, आत्मनिर्भर लोकतांत्रिक इकाइयों के रूप में स्थापित करना।
- **ट्रस्टीशिप:** संपत्ति के निजी स्वामित्व के स्थान पर उसे समाज का ट्रस्ट मानने की अवधारणा।
- **नई तालीम:** शिक्षा को रोजगारपरक, मूल्यपरक और जीवन-केंद्रित बनाने का दृष्टिकोण।

वैश्विक गाँव की समकालीन चुनौतियाँ- आज का वैश्विक गाँव कई गंभीर संकटों से जूझ रहा है। गाँधी के दर्शन पर आधारित हालिया अकादमिक शोध बताते हैं कि परंपरागत विकास मॉडल, जो लाभ अधिकतमकरण और असीमित इच्छाओं पर केंद्रित है, ने असमानता, संसाधनों की कमी और अनुपातहीन धन संचय जैसी समस्याएँ उत्पन्न की हैं। एक सीमित विश्व में असीमित वृद्धि ने हमें सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिक संकटों की ओर धकेल दिया है।[3]

कोविड-19 महामारी ने इस नाजुकता को उजागर कर दिया। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के चरमराने, एकीकृत वैश्विक अर्थव्यवस्था के संक्रामक प्रभावों, और आंतरिक विस्थापन की अस्थिरता ने यह सिद्ध कर दिया कि हमारे समाज और बाजार की संरचना में मूलभूत समस्याएँ हैं ऐसे समय में, गाँधी के विचार मध्यम मार्ग का विकल्प प्रस्तुत करते हैं—बाजार गतिविधियों और व्यक्तिगत उपभोग प्रथाओं में संयम, जो लोगों और ग्रह पर आर्थिक गतिविधियों के नकारात्मक प्रभाव को कम कर सकता है ।[4]

डिजिटल युग में गाँधीवादी अर्थशास्त्र की पुनर्प्रतिष्ठा:

डिजिटलीकरण के तीन स्तंभ- न्यूनीकरण, विकेंद्रीकरण और लोकतंत्रीकरण है | अनंत महिंद्रा ने गाँधीवादी अर्थशास्त्र और डिजिटल युग के बीच तीन मूलभूत सेतु पहचाने हैं, जो दर्शाते हैं कि कैसे डिजिटल प्रौद्योगिकी गाँधी के दृष्टिकोण को साकार कर रही है।[5]:

1. **न्यूनीकरण-** प्रौद्योगिकी अब बड़े, जटिल और महंगे उपकरणों को छोटे, सस्ते और सुलभ बना रही है। उदाहरण के लिए, पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन ऑफ इंडिया द्वारा विकसित "स्वास्थ्य स्लेट" एक एंड्रॉयड-आधारित मोबाइल प्रणाली है जो 32 नैदानिक परीक्षण कर सकती है। इससे सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता गाँवों में ही बुनियादी जाँच और उपचार कर सकते हैं, जो गाँधी के ग्राम-केंद्रित स्वास्थ्य सेवा के सपने को साकार करता है।
2. **विकेंद्रीकरण-** डिजिटल प्रौद्योगिकी बिचौलियों को समाप्त कर रही है और शक्ति का विकेंद्रीकरण कर रही है। महिंद्रा ने चावी राजावत का उदाहरण दिया—राजस्थान के सोडा गाँव की पहली एमबीए सरपंच, जिन्होंने मोबाइल फोन के माध्यम से ब्लॉक एसोसिएशन को दरकिनार कर सीधे ग्राम विकास निधि का उपयोग सुनिश्चित किया।[6] आधार योजना भी इसी विकेंद्रीकरण का एक बड़ा उदाहरण है, जो सब्सिडी को सीधे लाभार्थी के खाते में पहुँचाकर बिचौलियों को हटाती है और "आम आदमी के अधिकार" को सुदृढ़ करती है ।
3. **लोकतंत्रीकरण-** डिजिटल प्लेटफॉर्म पहुँच और अवसरों का लोकतंत्रीकरण कर रहे हैं। मंडी ट्रेड्स ऐप किसानों को अपनी उपज की कीमत, तिथि और संपर्क जानकारी साझा करने का मंच देता है, जिससे "मूल्य खोज की शक्ति किसानों के हाथों में" आ जाती है ।[7] फार्मिगो जैसे प्लेटफॉर्म उपभोक्ताओं को सीधे स्थानीय किसानों से जोड़ते हैं, जिससे आपूर्ति श्रृंखला छोटी होती है और सामुदायिक अर्थव्यवस्था पुनर्जीवित होती है। यह गाँधी के आत्मनिर्भर समुदायों के विचार को डिजिटल रूप में प्रस्तुत करता है।[8]

टेक्नोफाइसिंग- हालिया अकादमिक शोध में "टेक्नोफाइसिंग" की अवधारणा विकसित की गई है, जो गाँधीवादी दृष्टिकोण से प्रौद्योगिकी के उपयोग की पुनर्व्याख्या करती है। कुरैशी एवं अन्य के अनुसार, "यह स्पष्ट होता जा रहा है कि सस्ते और आसानी से अनुकूलनीय तकनीकी समाधान, सीमित संसाधनों वाले वातावरण में हाशिए के समुदायों की समस्याओं के समाधान के लिए अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों की तुलना में अधिक प्रभावशाली हो सकते हैं।[9]
टेक्नोफाइसिंग के आवश्यक तत्व हैं:

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

· उपयोग में आसान प्रौद्योगिकी
· समुदाय के सदस्यों के साथ संबंधों का निर्माण
· उन गतिविधियों से परिचितता जिन्हें डिजिटल समाधान समर्थन दे रहे हैं
· हाशिएकरण और सामाजिक स्तरीकरण के प्रति जागरूकता

यह दृष्टिकोण गाँधी के "लोगों की मशीन" (चरखा) के विचार का डिजिटल रूपांतरण है—ऐसी तकनीक जो लोगों के नियंत्रण में हो, न कि लोग तकनीक के नियंत्रण में।

गाँधीवादी सिद्धांतों का समकालीन अनुप्रयोग:

ग्राम स्वराज का डिजिटल पुनर्जन्म- गाँधी की ग्राम स्वराज की अवधारणा आज के विकेंद्रीकृत डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र में नए सिरे से जीवंत हो रही है। ठाकुर और मिश्रा के अनुसार, "गाँधी ने एक ऐसे राज्य की कल्पना की थी जहाँ पंचायतें (गाँव) प्रशासन की मूल इकाइयाँ हों, और प्रत्येक व्यक्ति प्रणाली का एक आवश्यक हिस्सा हो। शासन का यह स्थानीयकरण, प्रचलित समरूप शासन मॉडल के सीधे विरोध में खड़ा है"।[10]

डिजिटल युग में, यह स्थानीयकरण नए रूप ले रहा है:

- **ई-पंचायत:** केंद्र सरकार की ई-पंचायत पहल ग्राम पंचायतों के कामकाज को डिजिटल बना रही है, जिससे पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ रही है।
- **सामुदायिक डिजिटल प्लेटफॉर्म:** स्थानीय स्तर पर निर्मित डिजिटल प्लेटफॉर्म किसानों, कारीगरों और छोटे उद्यमियों को सीधे बाजार से जोड़ रहे हैं।
- **ग्रामीण वाई-फाई और डिजिटल साक्षरता:** डिजिटल इंडिया के तहत ग्राम पंचायतों को ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क से जोड़ा जा रहा है, जो गाँधी के "प्रत्येक गाँव की स्वायत्तता" के सपने को डिजिटल बुनियादी ढाँचा प्रदान कर रहा है।

ट्रस्टीशिप और कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व- गाँधी का ट्रस्टीशिप सिद्धांत आज की कॉर्पोरेट दुनिया में कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (CSR) के रूप में पुनर्जीवित हो रहा है। वैद्यनाथन के अनुसार, "ट्रस्टीशिप पूँजीवाद और साम्यवाद के बीच एक मध्य मार्ग प्रस्तुत करता है... यह सर्वोदय (सबके उत्थान) को प्राप्त करने का एक साधन है"।[11]

भारत में कंपनी अधिनियम 2013 के तहत अनिवार्य CSR, इस सिद्धांत का एक व्यावहारिक रूप है—कंपनियाँ अपने लाभ का एक हिस्सा समाज के कल्याण के लिए न्यास के रूप में उपयोग कर रही हैं। यह गाँधी के इस विचार को मूर्त रूप देता है कि "धनवानों को अपनी संपत्ति का स्वामी नहीं, बल्कि समाज का ट्रस्टी समझना चाहिए।"

सर्वोदय और सामाजिक उद्यमिता- गाँधी का सर्वोदय (सबका उत्थान) सिद्धांत आज सामाजिक उद्यमिता के बढ़ते क्षेत्र में नया जीवन पा रहा है। भट्ट एवं अन्य के अनुसार, यह पुस्तक गाँधीवादी सिद्धांतों के मूल तत्व प्रस्तुत करती है और उन सामाजिक संगठनों के उदाहरण देती है जो गाँधीवादी सिद्धांतों के अनुरूप सामाजिक रूप से अंतर्निहित आर्थिक गतिविधियों के पुनर्गठन के लिए समुदाय और गाँव-केंद्रित दृष्टिकोण अपना रहे हैं। ये संगठन सर्वोदय, अंत्योदय (अंतिम व्यक्ति का उत्थान), आत्मनिर्भरता, नई तालीम और ट्रस्टीशिप जैसे सिद्धांतों को क्रियान्वित कर रहे हैं। वे समुदाय-स्तर पर लचीलापन और कल्याण बढ़ाने के लिए इन सिद्धांतों का उपयोग कर रहे हैं।[12]

नई तालीम और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020- गाँधी की नई तालीम (बुनियादी शिक्षा) की अवधारणा—जो शिक्षा को हस्तकला, रोजगार और जीवन-मूल्यों से जोड़ने पर बल देती है—आज की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में एक नए रूप में प्रतिध्वनित होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कौशल विकास, व्यावसायिक शिक्षा और मूल्य-आधारित शिक्षा पर जोर, गाँधी के उस दृष्टिकोण का आधुनिक संस्करण है जिसमें शिक्षा केवल डिग्री अर्जन का साधन नहीं, बल्कि समग्र मानव विकास का मार्ग थी।

गाँधीवादी पर्यावरण चेतना और वैश्विक जलवायु संकट:

गाँधी और गहन पारिस्थितिकी- गाँधी का पर्यावरण दर्शन आज के जलवायु संकट के समय अत्यधिक प्रासंगिक हो गया है। डुंग के अनुसार, "यह अध्ययन उनके दर्शन और आज दुनिया के सामने मौजूद गंभीर चुनौतियों के बीच सार्थक संबंध स्थापित करना चाहता है, यह प्रदर्शित करते हुए कि गाँधी का न्यूनतमवाद और अहिंसा पर जोर आधुनिक समस्याओं, विशेष रूप से पर्यावरणीय संकटों के लिए व्यावहारिक और गहन समाधान प्रदान करता है"।[13]

गाँधी का प्रसिद्ध कथन—"प्रकृति के पास मनुष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, लेकिन मनुष्य के लालच को पूरा करने के लिए नहीं"—आज के अति-उपभोग और संसाधन दोहन के युग में एक चेतावनी के रूप में खड़ा है। गाँधी का अपरिग्रह (अनावश्यक संग्रह का त्याग) और सादा जीवन का दर्शन, आधुनिक स्थिरता आंदोलनों की आधारशिला बन गया है।

वैश्विक हरित आंदोलन और गाँधी- अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन "गाँधी एंड द कंटेम्पररी वर्ल्ड" (2025) के उद्देश्यों में स्पष्ट रूप से कहा गया है: "वैश्विक हरित आंदोलनों और भारतीय पर्यावरण अभियानों ने संघर्ष समाधान के लिए गाँधीवादी रणनीतियों के प्रति अपनी ऋणग्रस्तता स्वीकार की है"।[14]

चिपको आंदोलन से लेकर नर्मदा बचाओ आंदोलन तक, भारत के पर्यावरण आंदोलनों ने गाँधीवादी अहिंसा और सत्याग्रह के तरीकों को अपनाया है। वैश्विक स्तर पर, ग्रेटा थनबर्ग के नेतृत्व में "फ्राइडेज़ फॉर फ्यूचर" आंदोलन और एक्सटिंक्शन रिबेलियन जैसे समूह अहिंसक नागरिक अवज्ञा के गाँधीवादी तरीकों का उपयोग जलवायु न्याय के लिए कर रहे हैं।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

चुनौतियाँ और आलोचनाएँ

गाँधी के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता को स्वीकार करते हुए भी, कुछ आलोचनात्मक प्रश्न उठते हैं:

- क्या गाँधीवादी ग्राम-केंद्रित दृष्टिकोण अत्यधिक शहरीकृत विश्व में व्यवहार्य है?
  आलोचकों का तर्क है कि गाँधी का ग्राम-केंद्रित मॉडल एक ऐसे विश्व में अव्यावहारिक है जहाँ 55% से अधिक जनसंख्या शहरों में रहती है और शहरीकरण की गति तीव्र है। परंतु गाँधीवादी दृष्टिकोण "नए शहरीकरण" और "सतत शहर" की अवधारणाओं में पुनर्जीवित हो रहा है, जहाँ शहरों को भी आत्मनिर्भर, विकेंद्रीकृत इकाइयों के रूप में विकसित करने पर बल दिया जा रहा है।
- क्या डिजिटल प्रौद्योगिकी गाँधी के आत्मनिर्भरता के विचार को कमजोर नहीं करती?
  एक और आलोचना यह है कि डिजिटल प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से सोशल मीडिया और AI, व्यक्ति को एक नए प्रकार की निर्भरता—डिजिटल निर्भरता—में धकेल रही है। गाँधी का उत्तर यह हो सकता है कि प्रौद्योगिकी का उपयोग साधन के रूप में किया जाए, साध्य के रूप में नहीं। टेक्नोफाइसिंग दृष्टिकोण यही सुनिश्चित करता है कि प्रौद्योगिकी मानव के नियंत्रण में रहे, न कि मानव प्रौद्योगिकी के नियंत्रण में।

निष्कर्ष

वैश्विक गाँव में गाँधी की प्रासंगिकता इस तथ्य में निहित है कि उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जहाँ प्रौद्योगिकी, अर्थशास्त्र और सामाजिक संबंध नैतिकता, स्थिरता और मानवीय गरिमा के अधीन हों। आज, जब हम AI के नैतिक उपयोग, डेटा गोपनीयता, जलवायु न्याय और सामाजिक असमानता जैसे मुद्दों से जूझ रहे हैं, गाँधी का दर्शन हमें एक मार्गदर्शक प्रकाशस्तंभ प्रदान करता है। गाँधी का प्रसिद्ध सिद्धांत "बी द चेंज यू विश टू सी इन द वर्ल्ड" आज के वैश्विक गाँव में एक नया अर्थ ग्रहण करता है।

आइंस्टीन के शब्दों में, "आने वाली पीढ़ियाँ शायद विश्वास नहीं करेंगी कि ऐसा व्यक्ति कभी इस धरती पर रहा होगा" । परंतु गाँधी केवल एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं हैं; उनके विचार, उनके सिद्धांत और उनका जीवन-दर्शन आज भी उतना ही जीवंत है जितना उनके समय में था। वैश्विक गाँव में, गाँधी सिर्फ एक स्मृति नहीं, बल्कि एक जीवंत मार्गदर्शक हैं, जो हमें बताते हैं कि कैसे हम प्रौद्योगिकी को मानवीय बना सकते हैं, अर्थव्यवस्था को न्यायसंगत बना सकते हैं, और समाज को अधिक समावेशी बना सकते हैं।

गाँधी का सपना—एक ऐसा विश्व जहाँ प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक समुदाय स्वावलंबी, सम्मानित और सशक्त हो—आज के डिजिटल युग में एक नए रूप में साकार हो रहा है। शायद, यही गाँधी की सबसे बड़ी प्रासंगिकता है कि वे हमें याद दिलाते हैं कि "वसुधैव कुटुम्बकम" (पूरी पृथ्वी एक परिवार है) का प्राचीन भारतीय आदर्श और "ग्लोबल विलेज" की आधुनिक अवधारणा के बीच का सेतु, केवल तकनीकी नहीं, बल्कि नैतिक और मानवीय हो सकता है।

संदर्भ सूची (References)

1. गाँधी, मोहनदास करमचंद (1909), हिन्द स्वराज. अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन मंदिर, पृ. 25
2. महिंद्रा, अनंत (2015), "महात्मा गाँधी डिजिटल युग के मसीहा हैं" (उद्धरण). इकोनॉमिक टाइम्स CIO, 16 नवंबर 2015, मुंबई, पृ. 1
3. भट्ट, बबीता, कुरैशी, इसरार, शुक्ला, धीरेंद्र मणि, एवं पिल्लै, विनय (संपादक) (2023), सोशल एंटरप्रेन्योरशिप एंड गांधियन थॉट्स इन द पोस्ट-कोविड वर्ल्ड. सिंगापुर: स्प्रिंगर, पृ. V
4. वही, पृ. VI
5. महिंद्रा, अनंत (2015), "महात्मा गाँधी डिजिटल युग के मसीहा हैं" (उद्धरण). इकोनॉमिक टाइम्स CIO, 16 नवंबर 2015, मुंबई, पृ. 2-3
6. वही, पृ. 2
7. वही, पृ. 2-3
8. वही, पृ. 1-2
9. कुरैशी, इसरार, पांडे, मीत, शुक्ला, धीरेंद्र मणि, एवं पिल्लै, विनय (2023), "टेक्नोफाइसिंग: रीइंटरप्रिटेशन ऑफ गांधियन पर्सपेक्टिव्स ऑन टेक्नोलॉजी". सोशल एंटरप्रेन्योरशिप एंड गांधियन थॉट्स इन द पोस्ट-कोविड वर्ल्ड में, सिंगापुर: स्प्रिंगर, पृ. 191
10. ठाकुर, रंगनाथ, एवं मिश्रा, बिनोद (2024), "इमेजिनिंग अ न्यू स्टेट: (री)विजिटिंग द गांधियन मॉडल ऑफ पंचायती राज इन द कंटेम्पररी डिस्कोर्स ऑफ पोस्टकोलोनियलिज्म एंड नियोलिबरलिज्म". जर्नल ऑफ ग्लोबल पोस्टकोलोनियल स्टडीज, खंड 12, अंक 1, गेन्सविले: यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ फ्लोरिडा,पृ. 70
11. वैद्यनाथन, आर (2023), "ट्रस्टीशिप: गांधियन अप्रोच टु रीकॉन्सेप्चुअलाइज सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी". सोशल एंटरप्रेन्योरशिप एंड गांधियन थॉट्स इन द पोस्ट-कोविड वर्ल्ड में,सिंगापुर: स्प्रिंगर, पृ. 29

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

12. भट्ट, बबीता, कुरैशी, इसरार, शुक्ला, धीरेंद्र मणि, एवं पिल्लै, विनय (संपादक) (2023), सोशल एंटरप्रेन्योरशिप एंड गांधियन थॉट्स इन द पोस्ट-कोविड वर्ल्ड. सिंगापुर: स्प्रिंगर, पृ. V
13. डुंग, बुई जुआन (2025), "महात्मा गांधीज मॉडर्न मिनिमलिस्ट फिलॉसफी एंड इट्स इन्फ्लुएंस ऑन द कंटेम्पररी वर्ल्ड". कालागातोस, फोर्टालेज़ा: पीपीजीएफआईएल-यूईसीई, पृ. 13
14. गीतम स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज (2025), "गाँधी एंड द कंटेम्पररी वर्ल्ड" अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन घोषणा, 9-10 जनवरी 2025, बेंगलुरु: गीतम विश्वविद्यालय, पृ. 14